SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"नई शिक्षा नीति 2020 का गठन आलोचनात्मक विश्लेषण"

डॉ0 सरोज कुमार वर्मा
बी0एड़0 विभाग
चौ0 बेचेलाल महाविद्यालय रसूलपुर, धौरहरा, लखीमपुर–खीरी।

सारांश :

NEP 2020 पुरानी शिक्षा नीति के 34 साल बाद आयी है इसमें छात्र को केन्द्रित मानकर शिक्षा सम्बन्धी परिवर्तन किये गये हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य था कि प्रत्येक स्तर पर क्या–क्या कमियां रह गयी हैं। जिनको जानकर सुधार सम्बन्धी सुझाव दिये जा सके। प्रस्तुत अध्ययन के बाद पाया कि प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा में संसाधन तथा अच्छे शिक्षकों की कमी है, साथ ही आगे तकनीकि शिक्षा की समस्या बन सकती है क्योंकि अंग्रेजी भाषा को शुरू से न पढ़ाने पर। माध्यमिक स्तर के छात्र जीवकोपार्जन के लिए मुख्यता तैयार किये जा रहे हैं ये आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा है। उच्च शिक्षा में अधिक लचीलापन होने के कारण छात्र शिक्षा व्यवस्था का नाजायज फायदा उठा सकते है। इस लिए इन बिन्दुओं को सुधार कर नई शिक्षा नीति की और अधिक अच्छा किया जा सकता है। नई शिक्षा नीति वैसे तो अपने आप में पूर्ण है फिर भी सभी बिन्दुओं से और अच्छी हो जायेगी।

मुख्य बिन्दु : NEP -2020, परिवर्तन, अलोचनात्मक विश्लेषण।

परिचय :

शिक्षा एक ऐसा संसाधन है जो परिवर्तन को जन्म देती है हमारी सोच को विकसित करती है जो नये परिवर्तन को अपना सके तथा अन्य परिवर्तन कर सके। हमारे देश भारत में वैदिक

काल से शिक्षा व्यवस्था काफी उत्तम स्तर की रही फिर भी लगातार परिवर्तन देखे गये लगातार हमने इस परिवर्तन को अपनाया और विकास मार्ग पर चल दिये तथा यह भी सत्य है प्रत्येक परिवर्तन सफलता तथा विकास के लिए नहीं होता है।

हाल ही में केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मंजूरी दी यह शिक्षा नीति 30 वर्ष पुरानी शिक्षा नीति 1986 को प्रतिस्थापित करती है।

नई शिक्षा नीति के प्रमुख बिन्दु :

- इस नीति के निर्माण में काफी समय लगा यह पूर्व इससे (ISRO) प्रमुख डॉ0 के कस्तूरीगन की अध्यक्षता में एक सीमित के सहायता से बनायी गयी।
- मई 2019 में इस नीति का मसौदा तैयार किया गया।
- NEP 2020 मे GDP के 6 प्रतिशत हिस्से के बराबर निवेश रखा गया जिससे शिक्षा में सुधार हो सके।
- नई शिक्षा नीति में वर्तमान में संक्रिय 10 + 2 के स्थान पर 5 + 3 + 3 + 4 प्रणाली के आधार पर शिक्षा व्यवस्था को रखा गया।
- तकनीकि के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया।
- इसमें छात्रों में रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया।
- NHRD के नाम में बदलाव : कैबिनेट द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय करने को मंजूरी दी गयी।
- नई शिक्षा नीति में प्रत्येक स्तर पर बदलाव किया गया प्राथमि, माध्यमिक तथा उच्च स्तर।
- मात्रभाषा तथा बहुभाषिकता पर बल दिया गया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

NEP 2020 शिक्षा में एक बड़ा परिवर्तन है इस कारण परिवर्तन को समझना आवश्यक होता है तभी हम शिक्षा या व्यवहार में इसको ला सकते हैं ''परिवर्तन के लिये शिक्षा आवश्यक है क्योंकि शिक्षा नई चाहत और उन्हें संतुष्ट करने की क्षमता दोनों पैदा करती है।'' (हेनरी स्टील) NEP 2020 में बहुत सारे बदलाव किये गये जो हमारे समाज को बहुत हद तक जिम्मेदारियों को

पूरा करता है बालक एक नई उमंग के साथ शिक्षा ग्रहण करने जायेगा क्योंकि शिक्षा अब बोझ नहीं होगी। फिर भी इसमें कुछ दोष नजर आते हैं इस उद्देश्य से इस अध्ययन का महत्व और ज्यादा बढ़ जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

उद्देश्य किसी भी कार्य की सफलता के लिये बनाये जाते हैं, नही तो यह ज्ञात करना मुस्किल कार्य होगा कि हम किस राह से जाये और कौन सा रास्ता चुने प्रस्तुत अध्ययन के उददेश्य निम्नलिखित हैं –

1. प्रारम्भिक शिक्षा में NEP 2020 के बदलाव का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक शिक्षा स्तर में NEP 2020 के बदलाव का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च शिक्षा स्तर में NEP 2020 के बदलाब का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

नई शिक्षा नीति 2020 का आलोचनात्मक विश्लेषण :

उद्देश्यानुसार नई शिक्षा नीति का विश्लेषण निम्नलिखित है –

प्रारम्भिक शिक्षा/प्राथमिक शिक्षा : यह शिक्षा की नीव कही जाती है इसका अच्छा होना अति आवश्यक है। प्राथमिक शिक्षा को दो भागों में बांटा गया है –

1. 3–5 वर्ष की आयु के लिये आंगनबाड़ी या बालवटिका या प्री स्कूल के माध्यम से युक्त, सुरक्षित और गुणवतापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की उपलब्धता कराना।
2. 6–8 वर्ष की आयु के लिए कक्षा 3–5 की शिक्षा प्रदान की जायेगी इसे बहुस्तरीय खेल और गतिविधियों आधारित द्वारा शिक्षा प्रदान की जायेगी।
3. परख (PARAKH) नामक एक नये राष्ट्रीय आंकलन केन्द्र की स्थापना की जायेगी जिससे मूल्यांकन के लिए मानक निर्धारण किये जा सके।
4. कृतिम बुद्धिमत्ता आधारित साफ्टवेयर का प्रयोग किया जायेगा जिससे प्रगति के मूल्यांकन तथा भविष्य में छात्रों को निर्णय लेने में सहायता मिल सके।
5. NEP में NHRD द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन की स्थापना की मांग की गयी।

बालक के प्रथम तीन वर्ष में शिक्षा के लिए तैयार किया जाता है।

1. फाउण्डेशन कोर्स (नीव तैयार करना)
2. किताबी बोझ को कम करना।
3. शिक्षा की नीव रखना।
4. 4 साल के बालक पहली कक्षा में।
5. 5 साल को बालक दूसरी कक्षा में।
6. + 3 में कक्षा 6, 7, 8 की शिक्षा प्रदान की जाये।

प्रारम्भिक शिक्षा में कहा गया शिक्षा इनकी मातृभाषा या बोलचाल की भाषा में साथ ही अंग्रेजी की अनिवार्यता नहीं होगी और बालकों को कक्षा 6 से कम्प्यूटर की शिक्षा प्रारम्भ की जाये। प्राथमिक शिक्षा का रिजल्ट समग्र अवलोकन पर होगा। साथ ही परीक्षा अपने पंसद की भाषा में होगी। सामान्य कक्षा में 30 : 1 तथा सामाजिक आर्थिक पिछड़ा क्षेत्र में 20 : 1 का अनुपात होगा जिससे शिक्षा ठीक तरह से चल सके। छठी क्लास से वोकेशनल कोर्स शुरू किये जायेगें इसके आगे छठी क्लास से इंटर्नशिप करवाई जायेगी साथ ही म्यूजिक और आर्टस को बढ़ावा दिया जाएगा।

ECCE से जुड़ी योजनाओं का निर्माण और क्रियांवयन केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय महिला बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय व जनजातीय कार्य मंत्रालय के साक्षा सहयोग से किया जायेगा।

माध्यमिक शिक्षा/कक्षा 9–12 तक की शिक्षा : यह स्तर कक्षा 9–12 तक होता है जिसमें की NEP में स्तर तथा परीक्षा सभी में बदलाव किया गया है।

बोर्ड परीक्षा जिसमें की बालक का भय महसूस होता था ऐसे स्तर में बदल दिया जायेगा साथ ही बहुविकल्पीय प्रश्नों को ज्यादा स्थान दिया जायेगा। माध्यमिक स्तर पर भी शिक्षा को मात्रभाषा में देने की बात की गयी। कक्षा 12 तक व्यवसाय या कार्य के लिये तैयार किया जायेगा साथ ही विषयों को चुनने में लचीलापन रहेगा जिनके पास कला, वाणिज्य और विज्ञान में से कोई होगा वह इच्छानुसार विषय परिवर्तन करके अध्ययन किया जा सकेगा। पहले शिक्षा में GER कम था वह बढ़ाकर 6 प्रतिशत कर दिया गया साथ ही शिक्षा को निःशुल्क व अनिवार्य 18 साल तक की करने की बात की गयी।

- **उच्च शिक्षा/कक्षा 12 + की शिक्षा :** यह शिक्षा कक्षा 12 के बाद दी जाने वाली शिक्षा होती है जिसमें स्नातक तथा व्यवसायिक साथ ही तकनीकि शिक्षा भी दी जाती है।
- उच्च शिक्षा में सकल नामांकन 26.3 प्रतिशत (2018) से बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा गया 2035 तक।
- स्नातक पाठयक्रम में महत्वपूर्ण सुधार किया गया इसमें 3 या 4 वर्ष के स्नातक कार्यक्रम में छात्र कई स्तरों पर पाठयक्रम को छोड़ सकेगे और उसी अनुरूप डिग्री पर डिप्लोमा प्रदान किया जायेगा।
- 1 वर्ष में शर्टिफिकेट, 2 वर्षो के बाद डिप्लोमा वर्षो के बाद स्नातक की डिग्री तथा 4 वर्ष मं शोध के साथ स्नातक की डिग्री प्रदान की जायेगी।
- एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट दिया जाएगा। जिसमें प्राप्त अंको या क्रेडिट को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखा जायेगा।
- नई शिक्षा नीति के तहत M.Phill कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया है।
- चिकित्सा एवं कानूनी शिक्षा को छोड़कर पूरे उच्च शिखा क्षेत्र के लिए एक स्कूल निकाय के रूप में भारत उच्च शिक्षा आयोग का गठन किया जायेगा। HECI के कार्यो के प्रभावी निष्पादन के लिए चार संस्थानों निकाय का निर्धारण किया गया है–
  1. राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक परिषद।
  2. समान्य शिक्षा परिषद।
  3. उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद।
  4. राष्ट्रीय प्रत्यापन परिषद।
- पहली बार मल्टीपल ऐट्री और एग्जिट सिस्टम लागू किया गया जिसमें समय खराब नही होता 1 के बाद शर्टिफिकेट दो साल के बाद डिप्लोमा और तीन–चार साल बाद डिग्री मिल जायेगी। साथ ही यह भी कहा गया कि कोई कोर्स बीच में छोड़कर दूसरे कोर्स में दाखिला ले सकता है।
- जो छात्र रिसर्च करना चाहते उनके लिये चार साल डिग्री प्रोग्राम होगा वो लोग 1 साल के एम.ए. के बाद Ph.D में एडमिशन ले सकते हैं।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

- शोध कार्य को बढ़ावा देने के लिए मजबूत अनुसंधान के लिए शीर्ष निकाय के रूप में नेशनल रिसर्च फाउडेशन की स्थापना की जायेगी।
- शिक्षण प्रणाली से जुड़े सुधार–राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद वर्ष 2022 तक शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यवासायिक मानक का विकास किया जायेगा।
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा NCERT के परामर्श के आधार पर अध्यापक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठय चर्चा की रूपरेखा 2021 का विकास किया जाये।
- वर्ष 2022 से अध्यापन के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत बी0एड0 डिग्री का होना अनिवार्य किया जायेगा।

आलोचनात्मक विश्लेषण :

NEP 2020 में प्रत्येक स्तर पर हमें विशेषतायें देखने को मिलती है लेकिन सवाल यह उठता है जितनी अच्छी यह बनायी गयी है क्या प्रयोग भी उतना ही सफल हो जायेगा हमने इसका गहन अध्ययन किया जो कि निम्नलिखित आलोचनात्मक बिन्दु पाये जो इस प्रकार है –

संरचना में नाम का परिवर्तन :

NEP 2020 में फाउण्डेशन कोर्स 5 साल का कहा गया साथ में बालक को कोई एग्जाम नहीं देना होगा हो सकता है आने वाले समय में यह समस्या का कारण हो सकता है। + 3 में कक्षा 3, 4, 5 फिर + 3 में कक्षा 6, 7, 8 तथा + 9 में स्नातक की शिक्षा को कहा गया जिस उम्र में पहले बालक कक्षा 12 करता था आज भी वहीं संरचना है केवल नाम बदल दिया गया।

तकनीकि शिक्षा में समस्या :

प्राथमिक शिक्षा बालक को क्षेत्रीय भाषा या मात्र भाषा में दी जायेगी परन्तु कम्प्यूटर या ICT कोई भी साधन अंग्रेजी भाषा में अधिकतम मौजूद हैं इस परिवर्तन में बालक को तकनीकि शिक्षा में समस्या होगी वह कम्प्यूटर पर कार्य करने में सरकारी बालक प्राइवेट वाले से पिछड़ा नजर आयेगा।

शिक्षा मात्र भाषा या क्षेत्रीय भाषा में :

शिक्षा को मात्रभाषा में देने की बात कही गयी ताकि सभी विषय की किताबें मात्रभाषा में होना मुश्किल है, साथ ही आगे फिर अंग्रेजी भाषा में पढ़ायी करना और भी मुश्किल कार्य होगा। प्रत्येक राज्य की अपनी ही भाषा होता है जिसमें शिक्षण साधन सभी तरह के उपलब्ध होना बहुत

मुश्किल कार्य होता है और उच्च शिक्षा मात्रभाषा में नहीं दी जायेगी। तो इस तरह उच्च शिक्षा में समस्या उपलब्ध होगी।

शिक्षार्थियों के बीच अंतर को बढ़ाना :

कक्षा 5 तक की शिक्षा पंसदीदा माध्यम मातृभाषा तथा सरकारी स्कूल में कक्षा 5 के बाद अंग्रेजी होगी तो सरकारी तथा प्राइवेट छात्रों में अंतर होगा।

शिक्षा पर बढ़ा खर्च :

GDP का 3 प्रतिशत से 6 प्रतिशत हो गया साथ ही परीक्षा शिक्षक संसाधनों पर कुछ अनावश्यक खर्च भी देखने को मिलता है।

डिजिटल संसाधन (विभाजन की चुनौती) :

भारत में ICT की समस्या पहले से है साथ ही साथ ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या और ज्यादा है जहाँ पर व्यक्ति स्मार्टफोन या कम्प्यूटर नहीं खरीद सकता है जो शिक्षा के डिजिटलीकरण में कार्यावयन संबधी समस्यायें पैदा होगी।

अधिक लचीलापन :

स्नातक स्तर पर कुछ छात्रों को समस्या होती है जिन्हें बीच में पढ़ाई छोड़नी पड़ती है उनके लिए यह ठीक है 1 साल में सर्टिफिकेट 2 साल में डिप्लोमा तथा 3 साल में डिग्री होगी भत्ती एगजिट तथा एंट्री कही जाती है। परन्तु कुछ छात्र यह आनंद लेने या पढ़ायी के प्रति रूचि ना लेने पर अधिकांश करेगें क्योंकि उनके सामने कोई सर्त नहीं होगी शिक्षा पूरी करने का साथ ही सरल विषय को चुन कर डिग्री पूरा करना चाहेगें।

अधिक व्यवसायिकता पर जोर :

कक्षा 9 से व्यवसायिक शिक्षा की बात कहीं गयी कुछ लोग पढ़ना उतना ही चाहते हैं जिससे वह आगे धनार्जन कर सके तो वह आगे की शिक्षा नहीं लेना चाहते, इससे यह होगा उच्च शिक्षा कम लोग ही लेना चाहेंगे साथ ही रोजी कमाने में ज्यादा ध्यान रहेगा।

परिणाम/निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से पूर्व हमें NEP 2020 में प्रयोग करने में कोई समस्या नजर नहीं आती थी जब हमने इससे गहन आलोचनात्मक दृष्टि से अध्ययन किया तो पता चलता है–बालक

5+3+3+4 की शिक्षा संरचना में भी कुछ समस्याओं का सामना करेगा। कहने के लिए शिक्षा 3 वर्ष में प्रारम्भ की जा रही है परन्तु कक्षा 1 में 6 वर्ष का बालक ही पहुँचता है साथ ही भाषा सूत्र की अभी भी वही समस्या नजर आती है। प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने की कही गयी जबकि कक्षा 5 के बाद कम्प्यूटर की शिक्षा अभी तक कोई भी कम्प्यूटर हिन्दी में पूरी तरह नहीं बना। माध्यमिक स्तर में व्यवसायिक शिक्षा तथा किसी भी पढ़ने की झूठ की बात की गयी इस तरह छात्र विषय जीवकोपार्जन पर ज्यादा जोर देगा उच्च शिक्षा पर कम। उच्च शिक्षा में अधिक लचीलापन नजर आता है यह मेहनत करने वाले छात्रों को ठीक है वस्तु कुछ लोग शिक्षा का मजाक बना कर रख देते हैं, और कोई मेहनत नहीं करना चाहते तो यह शिक्षा नीति भी पूर्ण तरह से सफल नहीं हो पायेगी। हालांकि अभी तक की सबसे अच्छी नीति है जो छात्र केन्द्रित शिक्षा का पूरा ध्यान रखती है परन्तु कुछ कमियाँ भी नजर आती हैं।

सुझाव :

NEP 2020 में अध्ययन करके यह ज्ञात होता है निम्नलिखित सुधार की आवश्यकता नजर आती है जो कि इस प्रकार है –

1. प्राथमिक शिक्षा में (सरकारी स्कूल) में अंग्रेजी शुरू से पढ़ायी जाये जिससे बालकों को कम्प्यूटर या अन्य तकनीकि शिक्षा में समस्या ना हो।
2. क्षेत्रीय या मातृभाषा में शिक्षा की कही गयी परन्तु न तो इस तरह की सामग्री है ना ही अच्छे शिक्षक तो पहले इनकी व्यवस्था करायी जाये।
3. माध्यमिक स्तर की शिक्षा बालक अभी भी 18 साल की उम्र तक ही पूरी कर पायेगा जो की मुख्यता जीवकोपार्जन (व्यवसायिक) की शिक्षा को बढ़ावा देती है, हो सकता बालक उच्च शिक्षा ग्रहण कम करे या ना करना चाहे।
4. उच्च शिक्षा में अधिक लचीलापन देखने को मिलता छात्रों की पूर्ण जानकारी की जाये तभी मल्टीएग्जिट और एंट्री को दिया जाये।
5. पुराने शिक्षक प्रशिक्षण लिये शिक्षक छात्रों के लिए कोई अलग से नियमावली बनायी जाये जिससे वह भी 4 वर्षीय कोर्स वालों की तरह के मेल प्राप्त कर सके।

Reference /Webliography

1. https://www.drishtiias.com/hindi/daily news analysis/national- education- policy 2020.
2. https://hindi.news 18.com/news/education/nep-2020-pros and cons- of new education plocy-2020.
3. Natinal Education policy 2020 MHRD.
4. https://www.google.com
5. https://image.app.google

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/18

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 सरोज कुमार वर्मा

For publication of research paper title

"नई शिक्षा नीति 2020 का गठन आलोचनात्मक विश्लेषण"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com